सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में हिंदी काव्य गोष्ठी का आयोजन

सीएसआईआर-सीरी पिलानी में 17 अगस्त 2015 को **हिंदी काव्य गोष्ठी** का आयोजन किया गया। काव्य गोष्ठी में संस्थान के नियमित सहकर्मियों ने प्रतिभागिता की। काव्य गोष्ठी में कार्यक्रम का उद्देश्य कविता लेखन में रुचि रखने वाले सहकर्मियों की लेखन क्षमता को संस्थान-सहकर्मियों के समक्ष प्रस्तुत करना था। संस्थान के सभागार में आयोजित काव्य गोष्ठी में संस्थान के निदेशक तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य एवं अन्य सहकर्मी उपस्थित थे।

काव्य गोष्ठी के आयोजन की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए **श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी** ने सर्वप्रथम डॉ चंद्रशेखर, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी एवं उपस्थित सभी सहकर्मियों का स्वागत किया । आयोजन की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि प्रतिवर्ष हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित की जाने वाली कविता पाठ प्रतियोगिता में हमारे कई साथी अपनी रचनाओं का बहुत सुंदर काव्य पाठ करते हैं। इसे देखते हुए संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में निदेशक महोदय ने संस्थान के नियमित सहकर्मियों की स्वरचित काव्य-गोष्ठी के आयोजन का सहर्ष अनुमोदन प्रदान किया। उन्होंने बताया कि रा का स के निर्णय के अनुसार काव्य गोष्ठी का विषय सहकर्मियों का कार्य क्षेत्र तय किया गया है। उन्होंने कहा कि यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि अपने कवि-सहकर्मियों का उत्साहवर्द्धन करने के लिए निदेशक महोदय स्वयं उपस्थित हैं और उनकी उपस्थिति से इस आयोजन की गरिमा में चार चाँद लग गए है। इसके लिए उन्होंने निदेशक महोदय का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए उन्होंने उपस्थित सहकर्मियों को अंग्रेजी के प्रसिद्ध साहित्यकार विलियम शैक्सपीयर की उक्ति का उल्लेख करते हुए कहा कि कविता सशक्त मनोभावों का स्वत:स्फूर्त प्रस्फुटन है। उन्होंने इस अवसर पर आचार्य विश्वनाथ, पंडित जगन्नाथ, पंडित अंबिकादत्त व्यास आदि विद्वानों द्वारा दी गई कविता/काव्य की परिभाषाओं को भी बताया।

काव्य गोष्ठी में संस्थान के कुल 9 सहकर्मियों ने प्रतिभागिता की। कवियों तथा उनकी कविता का विवरण निम्नवत है –

1. श्री ओमप्रकाश आर्य, वरिष्ठ तकनीशियन
कविता का शीर्षक - बिजली का संचार
2. श्री सुनील उदयवाल, सहायक I (भंडार एवं क्रय)
कविता का शीर्षक - हम भंडार-क्रय अनुभाग के सहकर्मी
3. डॉ अशोक भाऊसाहब बोत्रे, वरिष्ठ वैज्ञानिक
कविता का शीर्षक - हमारी कार्यक्षमता और इंटरनेट
4. डॉ राम प्रकाश, वरिष्ठ वैज्ञानिक
कविता का शीर्षक – अभिनंदन
5. श्री प्रभूदयाल अजल, अधीक्षण अभियंता
कविता का शीर्षक - ईएमई प्रभाग
6. श्री महेन्द्र सिंह, अनुभाग अधिकारी (सामान्य)
कविता का शीर्षक – प्रशासन का प्रहरी
7. श्री पंकज गोस्वामी, अनुभाग अधिकारी (सामान्य)
कविता का शीर्षक - बिल चालीसा
8. श्री सुधीर चंद्र सिंह, निजी सचिव
कविता का शीर्षक - निज काम
9. श्री दिनेश कुमार कुकरेती, प्रबंधक(सीरी कैफे)
कविता का शीर्षक -सीरी कैन्टीन डॉक्यूमेन्ट्री

कविता-पाठ का आनंद लेते हुए निदेशक महोदय, डॉ एस अली अकबर एवं अन्य सहकर्मी

काव्य गोष्ठी में उपस्थित श्रोतागण

काव्य गोष्ठी के **संचालन का दायित्व** संस्थान में कैफेटेरिया के प्रबंधक **श्री दिनेश कुमार कुकरेती** ने संभाला। श्री कुकरेती का संक्षिप्त परिचय देते हुए श्री रमेश बौरा ने उपस्थित सहकर्मियों को बताया कि श्री कुकरेती न केवल सीरी कैफेटेरिया में प्रबंधक हैं अपितु वे उत्कृष्ट कवि भी हैं तथा हिंदी सप्ताह के दौरान संस्थान में आयोजित की जाने वाली कविता पाठ प्रतियोगिता में निर्णायक और संचालक की भूमिका भी निभाते रहे हैं। इससे पूर्व अनेक वर्षों तक उन्होंने इस प्रतियोगिता में पुरस्कार भी जीते हैं।

काव्य गोष्ठी का संचालन करते हुए श्री दिनेश कुमार कुकरेती

काव्य पाठ करते हुए सर्वश्री ओपी आर्य,सुनील उदयवाल, पी डी अजल, ए बी बोत्रे, रामप्रकाश, पंकज गोस्वामी, महेंद्र सिंह, एस सी सिंह और दिनेश कुकरेती

निदेशक महोदय ने कविता-पाठ के उपरांत सभी कवि-सहकर्मियों को **स्मृति चिह्न** भेंट किए।

कवि-सहकर्मियों को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए निदेशक महोदय

संस्थान के **निदेशक डॉ चंद्रशेखर** ने अपने संबोधन में सभी कवियों और उनके काव्य-पाठ की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस काव्य गोष्ठी को विषय-बंधन में बाँधने के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के निर्णय पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि जब यह विचार हुआ कि एक स्वरचित काव्य गोष्ठी होनी चाहिए तो इस संबंध में निर्णय लेते समय यह सोचा गया कि लोग अपनी पसंद से तो कविता पाठ करते हैं, क्यों न इस बार अपने साथियों के समक्ष अपने-अपने कार्य क्षेत्र से संबंधित कविता लिखने और वाचन करने की चुनौती रखी जाए। उन्होंने कहा कि आरंभ में यह

विषय साथियों को अवश्य अटपटा लगा होगा क्योंकि सामान्यतया कविता का विषय कार्यक्षेत्र नहीं होता है, यह अक्सर भावनात्मक होता है। आमतौर पर यह देखा गया है कि एक आदमी का काम दूसरे के लिए खेल होता है। उन्होंने कहा कि मेरा यह मानना है कि हर अच्छे काम के पीछे भावना अवश्य जुड़ी होती है।

उन्होंने कहा कि यद्यपि आरंभ में कर्मक्षेत्र से जुड़े विषय पर कविता लिखना हमारे साथियों को शुष्क या नीरस विषय लगा होगा परंतु मेरा मानना है कि विषय कोई नीरस नहीं होता, नीरस होता है उसे देखने का नज़रिया। हम आमतौर पर ऐसे विषय को मानवीय संवेदना की गहराई तक जाकर नहीं देखते। हमारे कामकाज के प्रति हमारा क्या दृष्टिकोण है, हम कैसे और कितनी लगन या समर्पण से अपना काम करते हैं, हमारा परिवार या समाज उसके बारे में क्या सोचता है। उन्होंने कहा कि मेरा मानना है कि इन सब बातों को लेकर कविता अवश्य की जा सकती है।

सहकर्मियों को संबोधित करते हुए डॉ चंद्रशेखर, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी

उन्होंने कहा कि आज प्रस्तुत की गई कविताओं से यह स्पष्ट हो गया कि कोई भी विषय शुष्क या नीरस नहीं होता अपितु कवि के शब्दों और प्रस्तुतीकरण में वह शक्ति और सामर्थ्य है कि वह उसे रोचक और मनोरंजक बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह केवल एक तजुर्बा था, सफलता की कोई गारंटी नहीं थी। पर मैं पूरी ईमानदारी से यह कहना चाहूँगा कि मुझे गर्व है अपने इन सभी साथियों पर जो अपनी कविताओं के माध्यम से विषय की सतह से गहराई तक गए और अपने भीतर के इन्सानी भाव, अपनी संस्था से जुड़ाव, उसके प्रति सम्मान, अपने काम के दौरान आने वाली कठिनाइयों-पीड़ाओं की अभिव्यक्ति और इन सबके बावजूद अपने कर्तव्य का पालन, संस्थान व समाज से भावनात्मक जुड़ाव और संस्थान व देश के प्रति अपनी कर्तव्य निष्ठा को इतनी सुंदर अभिव्यक्ति दी। उन्होंने इस नए प्रयोग की सफलता का श्रेय अपने कवि-साथियों को देते हुए कहा कि यह कार्य ऐसा है जैसे कि सूखी और बंजर ज़मीन पर हरी-भरी फसल लहलहा दी गई हो। उन्होंने कहा कि वे आज तक कई कवि सम्मेलनों में गए हैं, कुछ में एक श्रोता की तरह और कुछ में एक कवि के रूप में। पर इस काव्य गोष्ठी की सफलता इसी से सिद्ध होती है कि यदि आप मुझसे पूछें तो मैं आरंभ से अंत तक सभी कवियों की रचनाओं का सार या विषय वस्तु क्रम से बता सकता हूँ। ऐसा अब तक मेरे साथ कभी नहीं हुआ। इस काव्य गोष्ठी को समर्पित करते हुए संस्थान की त्रैमासिक राजभाषा समाचार पत्रिका "इलेक्ट्रॉनिक ज्योति" का एक विशेषांक प्रकाशित करने के हिंदी अधिकारी के प्रस्ताव को उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। उन्होंने अपने सभी साथियों से कहा कि साथियों की कविताओं से उनकी कर्तव्य निष्ठा की झलक तो मिलती ही है अपितु संस्थान के इतिहास पर भी नज़र जाती है कि किस प्रकार से अनेक संघर्षों और कठिनाइयों से हम आज यहाँ तक पहुँचे हैं। अपने उद्बोधन के अंत में उन्होंने अपने सभी साथियों की कर्तव्य निष्ठा को नमन करते हुए अपील की कि वे नि:स्वार्थ भाव से इसी प्रकार अपने कर्तव्य का पालन करें तथा संस्थान और राष्ट्र की सेवा करते हुए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहें।

धन्यवाद ज्ञापित करते हुए श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी

काव्य गोष्ठी के समापन पर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए **श्री रमेश बौरा, हिंदी अधिकारी** ने अत्यधिक व्यस्तता के होते हुए भी इस कार्यक्रम के लिए समय निकालने और आज हमें अपना आशीर्वाद देने के लिए हमारे बीच में उपस्थित रहने के लिए निदेशक महोदय के प्रति विशेष आभार व्यक्त किया। अंत में उन्होंने कहा कि संस्थान में यह एक अभिनव प्रयोग था। हर्ष का विषय है कि यह प्रयोग सफल रहा और भविष्य में भी राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अनुमोदन से इस प्रकार के आयोजन किए जाएँगे।